

परिवर्तन के महान क्षण: संवेदना से प्रत्यक्षवाद तक

विज्ञान और अध्यात्म के बीच संतुलन की वैज्ञानिक विवेचना

एकलव्य, मीरा,
गांधारी की
भाव-संवेदना



भौतिकवाद और
विलास-वैभव

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच शरीर का प्रकाश जबेब में पहुँचान ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे ब्रौंर मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रत्यक्षवाद का उदय: जो प्रत्यक्ष नहीं, वह अमान्य। इस कसौटी ने **अन्ध-विश्वास** को तो मिटाया, लेकिन साथ ही **नीतिमत्ता और आदर्शवादिता** को भी अस्वीकार कर दिया।

हाथों से छूना /
आँखों से देखना

विज्ञान की कसौटी

सत्य - बिजली,
पंखा, सुविधा

गहराई और
प्रतीक्षा

आत्मा, परमात्मा,
धर्म

झूठ / अमान्य

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा –

आध्यात्मिक प्राणी सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के
धर्म, कर्तव्य और परमार्थ की भावना। रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



वार्तालाप करने वाला पशु
स्वेच्छाचार और पशु-प्रवृत्तियाँ (जैसे बड़ी
मछली छोटी को खाती है)।



चलता-फिरता पौधा
केवल उदरपूर्ति और सुविधा-संवर्धन।

तर्क का पतन: जब जीव जगत में कर्तव्य और धर्म नहीं, तो
समर्थ मनुष्य अपने से कमजोर का शोषण क्यों न करे?

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रगति का भ्रम: विज्ञान ने सचमुच हमें सुखी बनाया है?

	अतीत (ऋषि युग)	वर्तमान (वैज्ञानिक प्रगति)
भौतिक साधन	कठिनाई और सादा जीवन	अद्भुत चमत्कारी साधन
आंतरिक स्थिति	सुख-शान्ति और प्रगतिशील जीवन	खिन्नता, विपन्नता और स्वार्थपरता
सामाजिक परिणाम	सतयुग का वातावरण	असमंजस और पीड़ित समाज

नास्तिक

नीत्से की घोषणा:
'ईश्वर मर चुका है'

पापों का कोई
डर नहीं

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

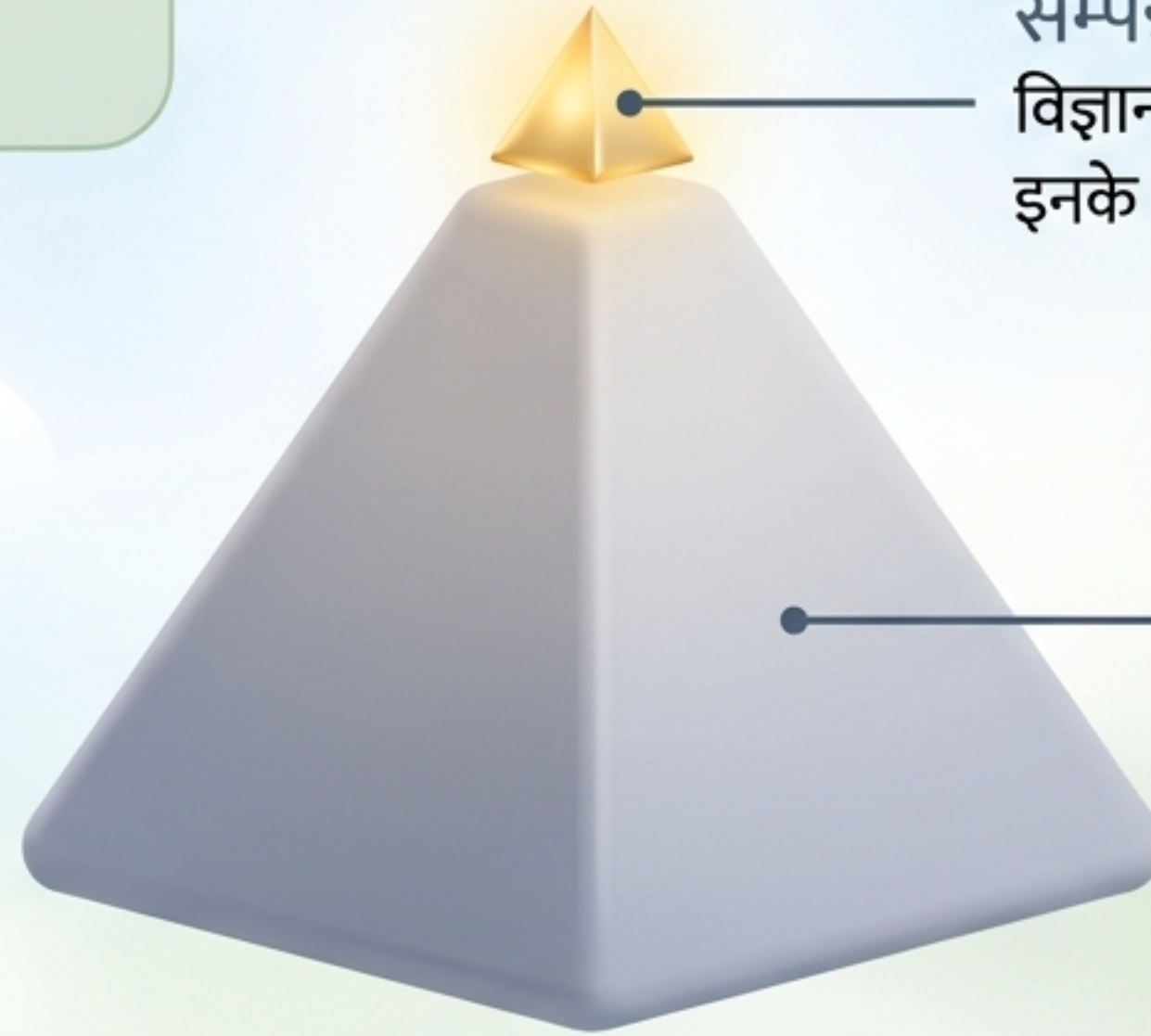
पाखण्डी
आस्तिक

धर्म केवल अफीम
की गोली / सस्ते
कर्मकाण्ड

पापों से सस्ती
मुक्ति का भ्रम

स्वार्थपरता,
अनाचार और
प्रच्छन्न
नास्तिकता

कृत्रिम अभाव: यदि विज्ञान के साथ सद्ज्ञान (नीति, समता, परमार्थ) होता, तो उत्पन्न सम्पदा सभी में बँट जाती और सभी समान स्तर का सुखी जीवन जी रहे होते।



सम्पन्न और चतुर लोग (१० / १०,०००)
विज्ञान द्वारा उत्पादित अधिकांश सामग्री
इनके हाथों में सीमित।

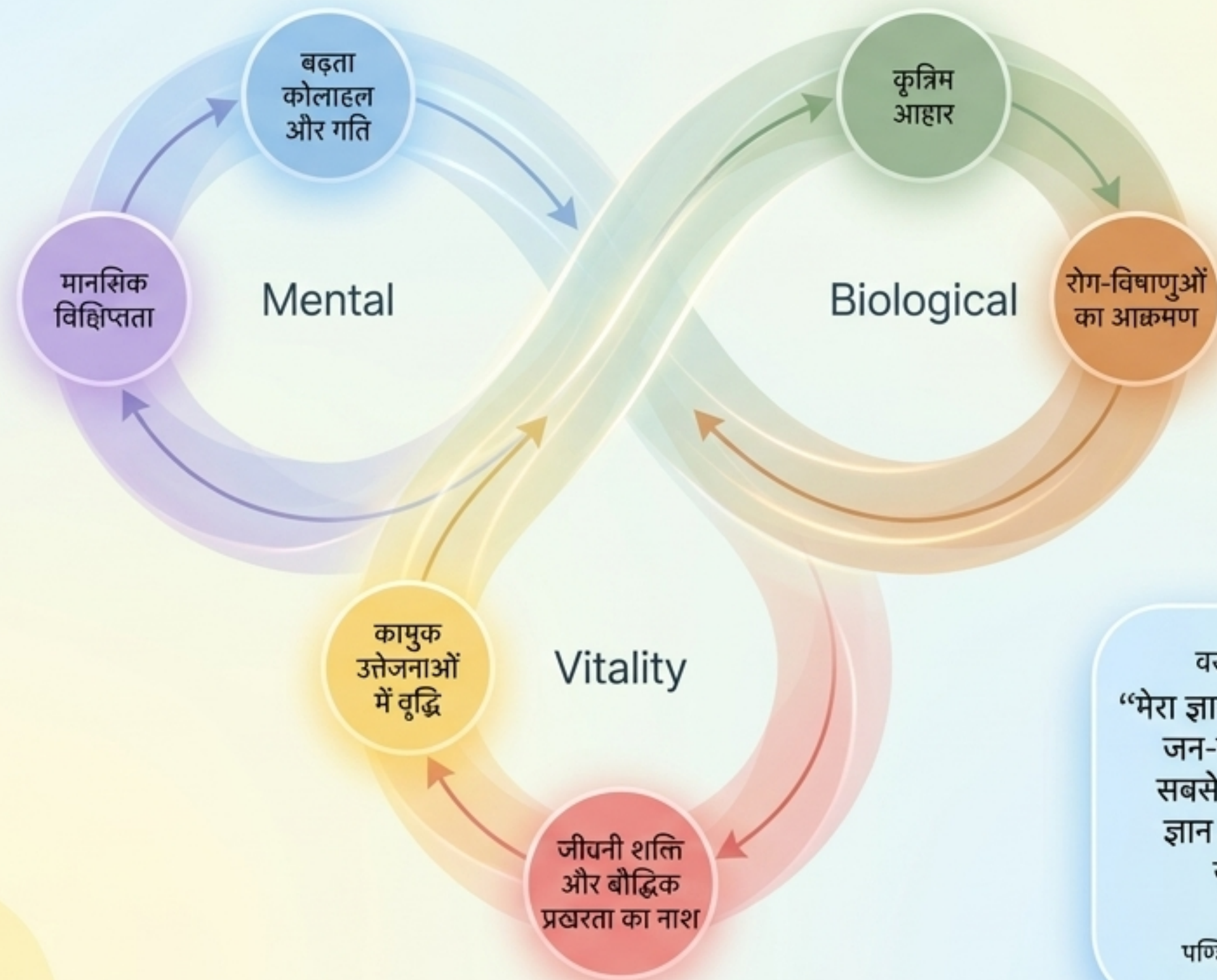
दुर्बल और भोले भावुक
(९,९९० / १०,०००)
अधिकारों का अपहरण और शोषण।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश के रंग में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कब प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगशुद्धि पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



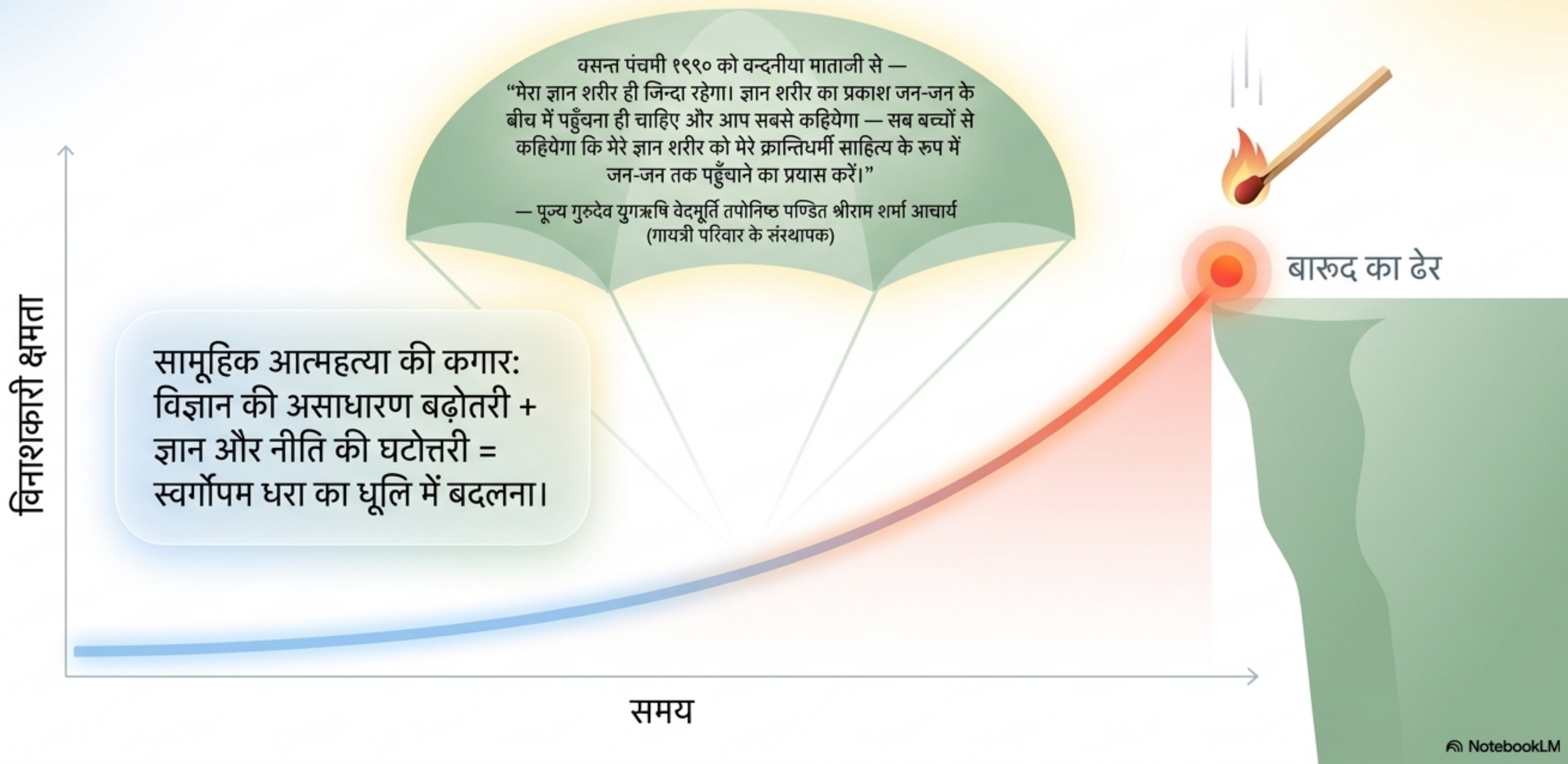
नीतिरहित भौतिकवाद की जैविक और सामाजिक दुर्गति



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप
सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे
ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदानुर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सामूहिक आत्महत्या की कगार: विज्ञान और नीति का असंतुलन



भौतिकवाद की उलटबाँसियाँ: शार्टकट की मृगतृष्णा



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

Diagnostic Lens

विष
लाभ



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन— जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

उल्टी समझ: आज का भटका हुआ मनुष्य अपने आपको सही मानता है।
प्रत्यक्षवाद ने नैतिक मूल्यों की उपयोगिता को नकार कर स्वेच्छाचार को जन्म दिया है।

२ विश्व युद्ध,
१००+ क्षेत्रीय युद्ध,
अपार धन-जन
की हानि।

शुद्ध भौतिकवाद

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा
रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही
चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि ये
ज्ञान शरीर को मेरे कान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन
तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

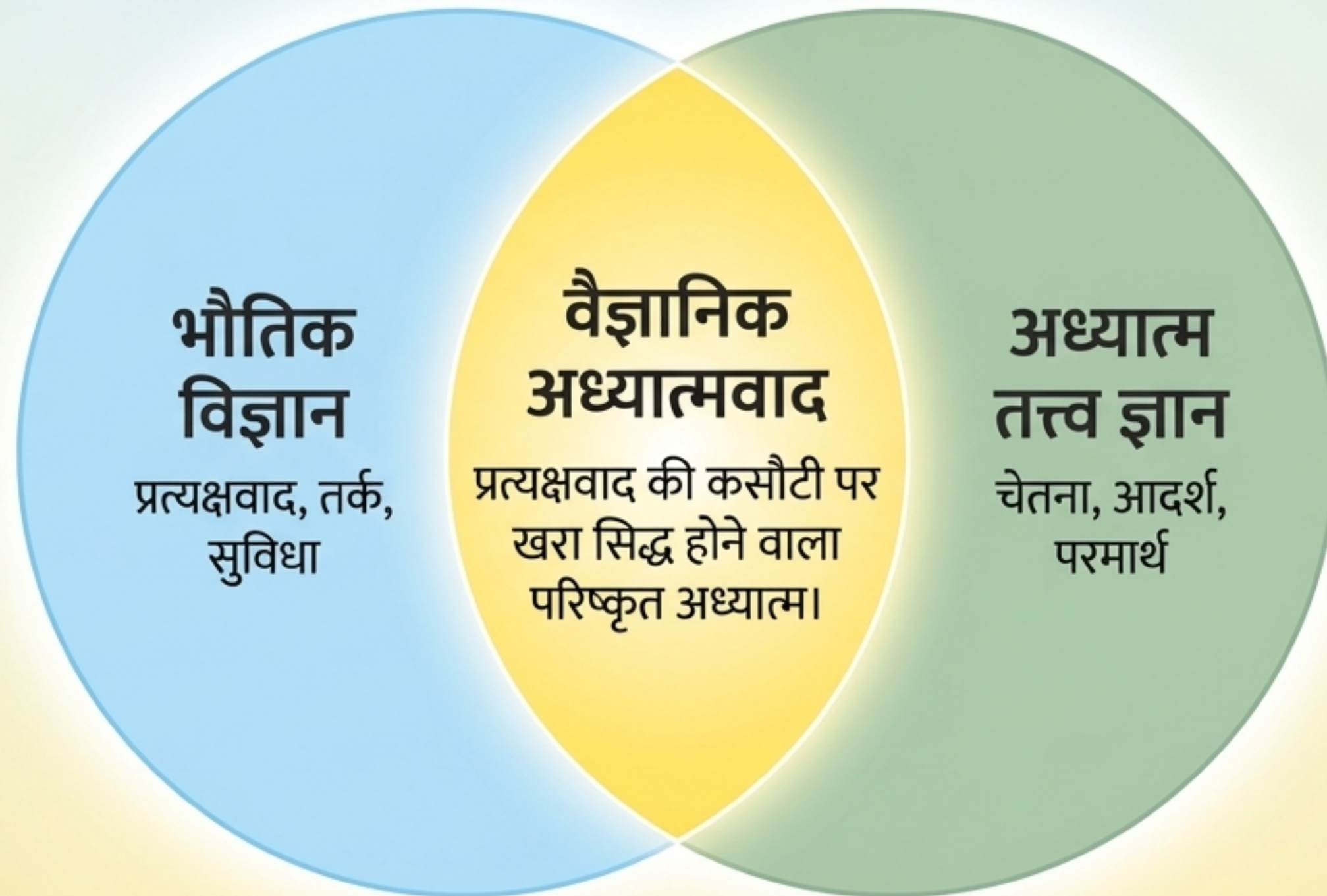
— पूज्य गुरुदेव
युगकृषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

लाखों कर्मकांडी
और साधु, फिर भी
समाज में विडम्बना
और गिरावट।

प्रचलित/पाखण्डी अध्यात्म

क्या कोई तीसरा विकल्प है?

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)





जड़ और साधनों का
उचित उपयोग।

+



चेतन का परिष्कार
और श्रद्धा-सद्भावना।

=

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही
चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब
बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



मनुष्य में देवत्व और
धरती पर स्वर्ग
(सतयुग की वापसी)।

यही है युग परिवर्तन और महासतयुग का आधार।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)